

Shri Thegtse Rinpoche

Shri Thegtse Rinpoche or Khinmey Rinpoche is revered as the 14th reincarnation of Kundun Sangay Yeshey-Rinpoche. His reincarnation has been recognized by His Holiness Mindrolling Thrichen Rinpoche and by His Holiness Dudjom Rinpoche when he was five years old.

2. Born on May 15, 1966, in the village called Lhou near Tawang district of Arunachal Pradesh, Shri Rinpoche, till the age of 15, learned the basics of Tibetan literature, grammar, calligraphy and various basic text of Buddhism. At the age of sixteen, he was formally initiated into Mindroling in-exile, the Nvingmapa Mahabuddha Vihara, Clement Town, Dehradun. He obtained Doctorate in Buddhist Philosophy from Ngyur Nyingma Institute, Clementon, Mindrolling, Dehradun.

3. Shri Rinpoche received numerous empowerments and teachings as Kama and Terma or treasures, from Shri Mindrolling Trichen Rinpoche, Taglung Tse Tul Rinpoche and Dodrupchen Rinpoche. In accordance with the wishes of Shri Mindrolling Trichen Rinpoche and Khochen Rinpoche, he was assigned a sojourn to Mindrolling in Tibet, where he came in direct contact with all the ritualistic tradition of Mindrolling lineage as it was and he was instrumental in bringing the living tradition into India after staying in Tibet for three months. And he gave teachings to young novices at Mindrolling for three years in India, which he learned in three months in Tibet.

4. After 12 years, Shri Rinpoche returned to his own monastery at Mon Tawang, which was established in 15th century. There are around 150 monks at Khinmey Nyingma monastery and they are being taught Buddhist philosophy, sutras, tantras and mainly the atti-yoga or Dzogchen practice of the lineage of Mindrolling, which he received through His Holiness Mindroling Trichen Rinpoche. The monastery has been renovated/reconstructed in grander and more systematic manner from the year 2000. Shri Rinpoche also looks after the other branch monasteries at upper Thegtse Meditation center, Gangkar Dung monastery, Dorchoed monastery, Dundub monastery, Norbu ling monastery, Lish Gontse monastery, Chugon monastery and Balemu Meditation Center. He often blesses and offers various empowerment and ritual performances and gives teaching to aspiring beings, especially for the disciples in Taiwan, Bhutan, and India.

5. Shri Rinpoche is the President, Northeast Vajrayana Cultural Association, Tawang; and former Zila Chairperson, Panchayat, Tawang. He has actively organized Seminars, Teachings, Monastic education, Cultural Programs. Shri Rinponche has also been providing Health care and Sowa-Rigpa system of medicine to the people.



श्री थेगचे रिनपोछे

श्री थेगचे रिनपोछे, या खिनमे रिनपोछे को कुंडुल संगय येशे-रिनपोछे के 14वें पुनर्जन्म के रूप में पूज्य माना जाता है। जब आप पांच वर्ष के थे तब संत मिंड्रोलिंग त्रिचेन रिंपोचे और संत डुड्जोम रिंपोचे ने आपके पुनर्जन्म को मान्यता दी।

2. आपका जन्म मई 15, 1966 को अरूणाचल प्रदेश के तवांग जिले के निकट ल्होऊ नामक गांव में हुआ। आपने 15 वर्ष की आयु तक तिब्बती साहित्य, व्याकरण, सुलेखन और बुद्ध के सिद्धांतों से संबंधित विभिन्न बुनियादी विषयों का अध्ययन किया। सोलह वर्ष की आयु में आपको मिंड्रोलिंग वनवास में, न्विंग्मापा महाबुद्ध विहार, क्लेमेंट टाउन, देहरादून में औपचारिक रूप से दीक्षित किया गया। आपने न्यायुर न्यीगंमा संस्थान, क्लेमेंटन, मिंड्रोलिंग, देहरादून से बुद्धिस्ट दर्शनशास्त्र में डॉक्टरेट की डिग्री प्राप्त की।

3. आपने सर्वश्री मिंड्रोलिंग त्रिचेन रिंपोचे, तागलुंग त्से तुल रिंपोचे और दोद्रुपचेन रिंपोचे से काम और तेर्मा या ट्रेजरर के रूप में कई शक्तियां और शिक्षाऐं प्राप्त कीं। श्री मिंड्रोलिंग त्रिचेन रिंपोचे और खोचेन रिंपोचे की इच्छाओं के अनुसार आपको तिब्बत में मिंड्रोलिंग आवास सौंपा गया जहां आप तत्कालीन मिंड्रोलिंग वंश परंपरा के सभी कर्मकांडों के सीधे संपर्क में आए और तिब्बत में तीन माह तक ठहरने के बाद आपने भारत में जीवंत परंपरा लाने में मुख्य भूमिका निबाही। तिब्बत में तीन माह के दौरान आपने जो कुछ सीखा था उसे आपने भारत में तीन वर्षों में मिंड्रोलिंग में युवा नौसिखियों को सिखाया।

4. बारह वर्ष के बाद आप मॉन तवांग में अपनी मॉनेस्टरी में लौट गए जिसे 15वीं शताब्दी में स्थापित किया गया था। खिन्मे न्यिंगमा मॉनेस्टरी में लगभग 150 बौध भिक्षु हैं और उन्हें बुद्ध दर्शन, सूत्र, तंत्र और अति-योग या मिंड्रोलिंग वंश परंपरा द्जोग्चेन प्रक्रिया सिखाई जा रही है जिसे आपने संत मिंड्रोलिंग त्रिचेन रिंपोचे से सीखा था। इस मॉनेस्टरी का वर्ष, 2000 से और अधिक भव्यता और अधिक योजनाबद्ध ढंग से पुनरूद्धार/निर्माण किया गया है। आप ऊपरी थेगत्से मेडिटेशन सेंटर, गंगकर डुंग मॉनेस्टरी, दोरचोइड मॉनेस्टरी, डुंडुब मॉनेस्टरी, नोर्बु लिंग मॉनेस्टरी, लिस गोंत्से मॉनेस्टरी, चुगोन मॉनेस्टरी और बलेमू मेडिटेशन सेंटर में अन्य शाखा मॉनेस्टरी की भी देखभाल कर रहे हैं। आप अक्सर आशीर्वाद देते हैं और कई प्रकार की शक्तियां प्रदान करते हैं और धार्मिक अनुष्ठान करते है और आकांक्षी शिष्यों, विशेष रूप से ताइवान, भूटान और भारत से आए शिष्यों को शिक्षा प्रदान करते हैं।

5. आप पूर्वोत्तर वज्रायण सांस्कृतिक संघ, तवांग के अध्यक्ष, पूर्व जिला पंचायत, तवांग के अध्यक्ष हैं। आपने सक्रिय रूप से सेमिनार, शिक्षा सत्र, मॉनास्टिक शिक्षण, सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए। आप लोगों को स्वास्थ्य सुविधा और औषधि की सेवा-रिग्पा पद्धति भी प्रदान कर रहे हैं।